अंक :4

नीपको तरंग

गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (नीपको), गुवाहाटी
नीपको भवन, आर.जी. बरुवा रोड, सुन्दरपुर गुवाहाटी असम-781005

नराकास उपक्रम गुवाहाटी

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

गृह मंत्रालय : राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE (PSUs), GUWAHATI

Ministry of Home Affairs : Deptt. of Official Language

प्रमाण पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी की

"रिफाइनरी राजभाषा चल वैजयंती शील्ड योजना"

के अंतर्गत ......नीपको...... को वर्ष 2019 के

दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु ......प्रशस्ति-पत्र...... पुरस्कार

प्रदान किया गया।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई !

संजय मनचंदा

(एस. मनचंदा)
अध्यक्ष
नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी

दिनांक : 13 दिसंबर, 2019

इंडियनऑयल IndianOil

कार्यालय : गुवाहाटी रिफाइनरी, नूनमाटी- 781 020
Office : Guwahati Refinery, Noonmati, Guwahati-781 020

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।
- महात्मा गांधी

नीपको तरंग

गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय

राजभाषा पत्रिका

मुख्य संरक्षक

श्री प्रदीत कुमार बोरा

कार्यपालक निदेशक-परियोजनाएं (**सी**)

संरक्षक

श्री सरल कुमार सरकार

मुख्य महाप्रबंधक (सी)

श्री रानेंद्र शर्मा

मुख्य महाप्रबंधक (सी)

श्री अशोक निथीग

मुख्य महाप्रबंधक सी)

संपादक मण्डल :

श्रीमती कबिता दास

वरि. प्रबंधक (मानव संसाधन)

विजय प्रजापति

सहायक - I (हिंदी)

सकंलन कर्ता-विजय प्रजापति

प्रकाशक :

मानव संसाधन विभाग

नीपको भवन

आर.जी. बरुवा रोड, सुन्दरपुर

गुवाहाटी, असम-781005

अंक : 4 | सितम्बर 2020

इस अंक में ...

प्राकृतिक पारितंत्र का संरक्षण	- अंजलि कलिता	9
एक कलम की आत्मा कथा	- दिपेंदु भट्टाचार्य	10
मानस : नेशनल पार्क	- विश्वजीत चक्रवर्ती	11
हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस-2019		14
माँ	- बीनापाणी हजारिका	16
जंगल सफारी के लिए तैयार है	- सोनाली पोद्दार प्रजापति / पत्नी - विजय प्रजापति	18
औरत	- कविता दास	20
प्रेरणा	- रीता राय	22
मैं तो पानी हूँ जी	- विजय प्रजापति	22
पूर्वोत्तर	- नमिता दास	23
राजभाषा हिंदी और मेरे मन का दर्द	- तरुण कुमार	24
26 जनवरी व 15 अगस्त		25

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में दिए गए विचार, मत तथा तथ्य, सम्बंधित लेखक के अपने हैं। उनसे संपादक तथा कम्पनी की सहमती होना आवश्यक नही हैं।

इस अंक में प्रकाशित लेखों आदि के विषय में आपकी प्रतिक्रिया सादर आमंत्रित है।

संदेश

यह हम सबके लिए प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को और आगे बढ़ाने के लिए नीपको भवन, गुवाहाटी द्वारा हिंदी पत्रिका ''नीपको तरंग'' का चतुर्थ अंक 'ई-पत्रिका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जो स्थानीय भाषा के साथ मिलकर एक संपर्क सूत्र का कार्य करती है और यह समझने तथा समझाने में भी कड़ी का कार्य करती है। अत: यह हम सब का दायित्व बनता है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति को अपने कार्यालयीन कामों में उपयोग करने के लिए हर संभव प्रयास करें।

मैं ''नीपको तरंग'' ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका नए कलेवर के साथ प्रकाशित होती रहेगी।

हिंदी दिवस के अवसर पर ''नीपको तरंग'' ई-पत्रिका पत्रिका के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनिल कुमार)

निदेशक (कार्मिक/वित्त)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि नीपको भवन, गुवाहाटी द्वारा हिंदी पत्रिका ''नीपको तरंग'' का चौथा अंक 'ई-पत्रिका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

नीपको भवन, गुवाहाटी द्वारा राजभाषा हिंदी से संबंधित सुरूचिपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने के उदेद्श्य से प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर ''नीपको तरंग'' ई-पत्रिका पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। यह हमारे नीपको परिवार के सदस्यों को हिंदी में अपनी सृजनात्मक क्षमता को जागृत करने के लिए भी प्रेरित करती है। मुझे विश्वास है कि नीपको भवन, गुवाहाटी का प्रत्येपक अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा हिंदी में अपना दैनिक कार्य करने का प्रयास करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर ''नीपको तरंग'' ई-पत्रिका के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

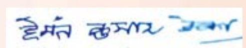

(हेमंत कुमार डेका)
निदेशक (तकनीकी)

संदेश

सबसे पहले मैं आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और हिंदी दिवस के अवसर पर नीपको भवन, गुवाहाटी में ''नीपको तरंग'' हिंदी पत्रिका का प्रति वर्ष प्रकाशन होता आ रहा है। पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा नीति के कार्यान्वकयन को आगे बढ़ाने के लिए नीपको भवन, गुवाहाटी द्वारा हिंदी पत्रिका 'नीपको तंरग' का प्रकाशन (ई पत्रिका) होगी । हिंदी आमतौर पर बोल-चाल की बहुत ही सहज भाषा है जो देशवासियों को आपस में जोड़ती है। हिंदी भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भी बोली जाती है। यह विश्व की चौथी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है ।

पत्रिका कार्मियों के हिंदी काम काज को निखारने में विशेष भूमिका निभाती है और निश्चित तौर पर एक उचित मंच मुहैया करवाती है ।

इस पत्रिका के प्रकाशसन से जुड़े सभी कार्मिकों और संपादक मण्डली को मैं धन्यवाद करता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ ।

– **श्री प्रदीप कुमार बोरा**
कार्यपालक निदेशक, गुवाहाटी

संपादिका की कलम से....

प्रिय साथियों,

''नीपको तरंग'' का चौथा अंक 'ई-पत्रिका' आप सभी समर्पित है मुझे इस पत्रिका के प्रकाशन से अपार खुशी हो रही है, यह पत्रिका सभी अधिकारियों एवं कार्मिको के संयुक्त प्रयासो द्वारा प्रकाशित की जा रही है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना और इसके प्रचार-प्रयार में योगदान देना हमारा नैतिक दायित्व है। नीपको भवन, गुवाहाटी में हिंदी के प्रति एक जिज्ञासा समर्पण की भावना रखते हैं। यह पत्रिका हमारे कामकाज और विचारों के आदान-प्रदान का सफल माध्यम साबित हो रही है।

मैं उन सभी लेखकों और पाठकों को तहेदिल से आभार प्रकट करती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आगे भी भविष्य में भी ''नीपको तरंग'' के बेहतर बनाने में आप सब लोगों का सहयोग मिलता रहेगा और महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होते रहेंगे। ''नीपको तरंग'' ई-पत्रिका के चौथे अंक के प्रकाशन में मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए हम कार्यपालक निदेशक, गुवाहाटी श्री प्रदीप कुमार बोरा के विशेष रूप से आभारी हैं।

मैं सभी को ''नीपको तरंग'' ई पत्रिका के सफल प्रकाशन के साथ साथ हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

कविता दास

– कविता दास

उप-महाप्रबंधक

(मानव संसाधन) नीपको लि. गुवाहाटी

नकद पुरस्कार योजना

नकद पुरस्कार योजना के तहत हिंदी में सरकारी कामकाज करने और अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कामकाज करने के लिए और उनका उत्साह बढ़ाने के लिए गुवाहाटी कार्यालय में नकद पुरस्कार योजना लागू है।

1.	प्रथम पुरस्कार (दो पुरस्कार)	1 रु. 5000 × 2 = 10,000/- श्रीमती रीता राय, कार्यकारी पर्यवेक्षक श्रीमती वीनापाणी हजारिका, वरि. डीजाइन तकनीशियन
2.	द्वितीय पुरस्कार (तीन पुरस्कार)	3000 × 3 = 9,000/- श्रीमती चंद्रा सैकिया, प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती अंजली कलिता, सहायक (एस. जी.) श्री दिपेंदु भट्टाचार्य, प्रशासनिक अधिकारी
3.	तृतीय पुरस्कार (पांच पुरस्कार)	2000 × 5 = 10,000/- श्रीमती अंजली महंता, कार्यकारी पर्यवेक्षक श्रीमती नवनीता डे, वरि. कार्यकारी सचिव श्रीमती रूमा दास, सहायक (एस.जी.) श्रीमती रिंकुमपी देवी, सहायक (एस.जी.) श्रीमती अरूंधती गोस्वामी, सहायक -।

प्राकृतिक पारितंत्र का संरक्षण

- अंजलि कलिता

प्राकृतिक पारितंत्र का मानव द्वारा दुरुपयोग किए जाने के कारण जैव विविधता और वन्य जीवन के सामने संकट पैदा हो गया है। बढ़ती हुई मानव जनसंख्या इसकी बढ़ती आवश्यकता है और लालच किसी भी प्राकृतिक पारितंत्र के विनाश का मूल कारण है।

किसी भी प्राकृतिक पारितंत्र का विनाश और क्षति परिस्थिति असंतुलन का कारण बन जाएगी और फिर मानव जाति स्वयं एक संकटापन्न प्रजाति बन जाएगी। प्राकृतिक पारितंत्रों का संरक्षण बहुत जरूरी है।

प्राकृतिक पारितंत्रों के संरक्षण में जैव मंडल के संसाधनों के मानवीय उपयोग का ऐसा प्रबंधन रीत है जिसके द्वारा वर्तमान पीढ़ी को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके तथा भावी पीढ़ी को आवश्यकता की पूर्ति के लिए इसके सामर्थ को रखा जा सके किसी पर्यावरणविद् के लिए प्राकृतिक पारितंत्र के संरक्षण का अर्थ है जंतुओं और पौधों की तमाम प्रजातियों को उनके प्राकृतिक वास स्थान में सुरक्षित रखना।

एक कलम की आत्मा कथा

दिपेंदु भट्टाचार्य

प्राचीन युग में मोरपंख, चिड़ियों के पंख या लाकड़ी का इस्तेमाल लिखने के लिए किया जाता है। उसके बाद में एक खास तरह की घास के एक हिस्से को नुकीला बनाकर उसे स्याही में भीगोकर लिखा जाता था। एक प्रकार गोली जिस प्रकार पानी में मिला कर स्याबही तैयार की जाती थी। फ़ाउंटें पेन में निब होती थी और उस में स्यारही भरी जाती थी। विद्यार्थी जव स्कूतल से लौटते समय उनकी यूनिफार्म और हाथ की अगुंलिया पुरी स्यारही से रंग जाती थी। दुनिया में फ़ाउंटेंपेन को आधुनिक बनाने का काम उन्नीकसवीं सदी में शुरू हुआ एविस वॉटरमैन ने 1884 में फ़ाउंटेंपेन को तैयार कराया। सबसे पहले फ़ाउंटें पेन 1702 मैं फ्रांस के एम बायोन ने तैयार किया था।

बीसवीं सदी में रिफिल वाले पैन अस्तित्व में आए जिसमें प्लास्टिक को एक पतली रिफिल में गाढ़ी इंक (स्याही) भरी होती थी। और आज के फ़उंटेंपेन भरी इंक (स्याही) से कहीं ज्यातदा समय इस्तेमाल किया जा सकता था।

एक कलम की आत्मकथा --- मैं छोटा सा एक पेन हूॅ आजतक मैंने दूसरों की बात लिखी उनका दुख-सुख की कहानियां और परिक्षा में उत्तर लिखे क्षात्र-क्षात्रा, डाक्टर, वकील, आध्यापिक, इंजीनियर और जज कितनों की कहानियां लिखी लेकिन मेरी कहानी कोई नहीं लिखता। मेरा भी एक इतिहास है मुझे एक दुकानदार ने एक सुदंर से शोकेस (showcases) में एक लाल बक्से में सुंदर से सजा कर रखा था। एक दिन एक ग्राहक ने मुझे खरीदा और उसने अपने बडे बेटे के जन्मदिन में उसको तोहफा दिया। बेटे की माँ ने कहा बेटा इस पेन से अच्छे से रखना और परिक्षा में इससे लिखना। लड़के ने उस पेन से परिक्षा में लिखा, लेकिन परिणाम अच्छा नहीं हुआ और फेल हो गया। गुस्से से मुझे रास्ते में फेंक दिया। मेरे ऊपर से कितने ही गाडियां और आदमी निकल गये। दूसरे दिन सुबह एक सज्जन ने मुझे उठा लिया और अपने बड़े बेटे दीपक को लिखने के लिए दिया, दीपक बहुत खुश हुआ और हनुमान जी के चरण में मुझे लगाकर अपने माथे पर बार-बार लगा कर प्रणाम किया।

हर परिक्षा में दीपक के परिणाम अच्छे आने लगे और एक दिन स्कूल के छात्र ने मुझे चुरा लिया। दीपक ने स्कूल में रोने लगा और अध्यापक से इस बात की शिकायत की। अध्यापक महोदय ने उसकी मदद की और मैं उसको दुबारा मिल गया। वह बहुत प्रसन्न हुआ और चूमने लगा। समय बितता गया और एक दिन मैं एक बड़ा आदमी बन गया और इधर मेरी भी इंक (स्याही) खत्म हो गई। मैं अब किसी काम का नहीं बचा था इसलिए मुझे एक डस्टविन में फेंक दिया।

मानस

नेशनल पार्क

विश्वजीत चक्रवर्ती

असम में जंगल सफारी के लिए मानस नेशनल पार्क भी बेहतर जगह है। मानस को स्थानीय लोग मनाह भी कहते हैं, क्योंकि इसके बीच से भूटान से आने वाली मनाह नदी बहती है। यह गुवाहाटी से करीब साढ़े तीन घंटे की ड्राइव पर है। वैसे रेल से बरपेटा रोड स्टेशन से वहां तक पहुंचा जा सकता है। मानस नेशनल पार्क में चीते की पर्याप्त संज्या है। मानस का लोकेशन अच्छा है। यह पूरी तरह हिमालय की तलहटी में बसा हुआ है। इसकी कई खूबियां हैं। असम से भूटान की सीमा के काफी अंदर तक जंगल फैला हुआ है। जंगली जीव बेरोकटोक आते रहते हैं। यहां पर प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व के साथ एलिफेंट रिजर्व और वन्य संपदा रिजर्व का क्षेत्रफल बढ़ाकर 950 वर्ग किमी कर दिया गया है। यह पार्क कई दुर्लभ और लुप्तप्राय: वन्य प्राणियों के लिए जाना जाता है। कछुए, गोल्डन लंगूर, पिग्मी होग, गरूड़, बारहसिंघा, चीते, तेंदुए, काला चीता, वाइल्ड वाटर बुफोलो और हिरणों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। बाघों के जिंदा रहने के लिए हिरणों की पर्याप्त संज़्या का होना जरूरी है। पार्क के बीच से बहने वाली मनाह नदी के नाम पर इसका नामाकरण हुआ है। इस पार्क में पक्षियों की 450 प्रजातियां पाई जाती हैं।

बोड़ो आंदोलन की वजह से मानस लगभग ध्वंस हो चुका था। लेकिन बीटीसी के गठन होने के बाद से बोड़ोलैंड प्रशासन इसके विकास और प्रचार के लिए विशेष प्रयास कर रहा है। वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा एक आवश्यक पहलू है। इसके लिए स्थानीय युवकों के समूहों को

तैयार किया गया है, जिन पर जंगल की सुरक्षा के साथ पर्यटकों की मदद करने का दायित्व है। इको-टूरिज्म पर्यटन क्षेत्र के स्तर पर मानस को नई पहचान मिली है। इसके लिए बीटीसी के वन विभाग के कार्यकारी सदस्य खंपा गियारी विशेष प्रयास कर रहे हैं। मानस मौजीगेंद्री इको-टूरिज्म सोसायटी इस दिशा में सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर काम कर रही है। मानस के उत्थान व विकास से बीटीसी क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्था पर व्यापक असर होगा।

करीब 525 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले मानस वन्य क्षेत्र को चीता के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है तथा देश में पहली दफा टाइगर प्रोजेक्ट पर मानस में ही काम शुरू किया गया था। मानस राष्ट्रीय उद्यान में वर्ष 1952 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार घने जंगलों के चारों ओर करीब 57 गांव बसे हुए हैं। जीवन-यापन के लिए अधिकांश लोग वन संपदा पर ही आश्रित थे। करीब दो दशक के बोड़ो संघर्ष के दौरान वन संपदा व यहां विचरने वाले जीवों का शिकारियों तथा स्थानीय लोगों ने काफी दोहन किया। अब उन गांवों के लोगों को वन मित्र के रूप में तैनात किया गया है। उसके सार्थक परिणाम भी सामने आए हैं।

पिछले कुछ वर्षों से वहां पर पर्यटकों की संज़्या बढ़ी है। इसे देखते हुए कुछ पर्यटक गेस्ट हाउस बनाए गए हैं। बरपेटा रोड में पर्यटकों के लिए जीप और हाथी की भी व्यवस्था की गई है। मानस के बीच में वन विभाग के गेस्ट हाउस में एक रात बिताकर रोमांचकारी अनभुव बटोरा जा सकता है। इस गेस्ट हाउस में बिजली की व्यवस्था नहीं है, लेकिन पर्यटकों के जाने पर जनरेटर चलाए जाते हैं। वहां पर खाने-पीने की व्यवस्था है। रात में जब चारों तरफ अंधेरा छा जाता है, तब कमरे की बंद खिड़की से बाहर विचरण करते जंगली जानवरों को निहारा जा सकता है। कई तरह के जंगली जानवर गेस्ट हाउस के बरामदे में विचरण करते हैं। वहां तक सिर्फ जीप से पहुंचा जा सकता है।

वन्य जीव प्रेमियों के लिए सबसे अच्छी खबर यह है कि असम और भूटान की सीमा पर स्थित प्राकृतिक और पारिस्थितिकी विविधाओं से परिपूर्ण मानस राष्ट्रीय पार्क अब खतरे से बाहर है। अन्य जीव-जंतुओं के साथ बाघों की संज़्या में बढ़ोतरी जारी है। जिन उग्रवादियों और अवैध शिकारियों ने असम से भूटान तक फैले इस राष्ट्रीय पार्क का विनाश कर दिया था, उन्हीं की बदौलत यह अपनी पुरानी मर्यादा और पहचान पाने में सफल हुआ है। और यह संभव हुआ है कि बोड़ोलैंड क्षेत्रीय परिषद और वन विभाग की लगातार की गई पहल से। इसकी विशेषताओं को देखते हुए यूनेस्को ने इसे 1985 में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था।

वन्य जीवों को करीब से देखने के लिए मानस आज बेहतर जगह है। यह रेलमार्ग पर बरपेटा रोड स्टेशन से करीब है और गुवाहाटी से बरपेटा के लिए बेहतर सड़क यातायात है। पार्क में पर्यटकों के ठहरने और घूमने का भी इंतजाम है। जंगल के एकदम बीच में बने गेस्ट हाउस में एक रात रुकने का अद्‌भुत सुख है। जब जंगली जानवरों और पक्षियों की आवाज के बीच वन्य जीवों को मुक्त विचरण करते देखा जाता है।

वर्ष 2009-10 के सर्वेक्षण के दौरान पंद्रह से बीस बाघों की मौजूदगी के प्रमाण मिले। इस बात के संकेत मिल रहे हैं कि बाघों की संज़्या में लगातार वृद्धि हो रही है, जबकि सर्वेक्षण में सिर्फ वयस्क बाघों को शामिल किया गया है। मानस राष्ट्रीय पार्क के फिल्ड डायरेक्टर ए. सरगियारी बताते हैं कि सर्वेक्षण में बाघ के शावकों को शामिल नहीं किया गया है। कैमरा ट्रेपिंग में कई नए बाघों के होने के प्रमाण मिले हैं।

बोड़ो टेरिटोरियल काउंसिल में वन विभाग का काम देख रहे बीटीसी के डिप्टी चीफ खज़्पा बसुमतारी ने मानस (मनाह) को उसकी पुरानी पहचान वापस दिलाने का संकल्प लिया है। इसे बचाने के लिए पूर्व बीएलटी उग्रवादियों, समर्पण कर चुके अवैध शिकारियों के साथ मानस से सटे गावों के युवकों के दल तैयार किए गए। उसी का परिणाम है कि जिन लोगों से मानस राष्ट्रीय उद्यान के जीव-जंतुओं को सबसे अधिक खतरा बताया जा रहा था, आज वही वर्ग इसके संरक्षण व विकास को लेकर तन्मयता से लीन हैं।

मानस प्रोजेक्ट टाइगर्स के फिल्ड डायेक्टर ए. सरगियारी का कहना है स्थिति काफी बदल चुकी है। कुछ वर्ष पहले तक लोग कहने लगे थे कि मानस में बाघ नहीं हैं। यह बात गलत साबित हुई। बाघों की संज़्या बढ़ रही है। बाघ के कई शावकों की तस्वीर भी कैमरे में मिली है। यानी बाघों का प्रजनन जारी है। यह एक बेहतर स्थिति है। हिरणों की संज़्या बढ़ने से बाघों को पौष्टिक खुराक आसानी से मिल रहा है। इससे प्रजनन में सुविधा होगी। हम कह सकते हैं कि मानस के बेहतर दिन वापस आ गए हैं।

मानस मौजीगेंद्री इको-टूरिज्म सोसायटी (एमएमईएस) नामक संस्था ने नींव का काम किया। एमएमईएस वास्तविक रूप से बोड़ो समुदाय के लोगों द्वारा ही गठित की गई है। कुछ वर्ष पहले तक जिनसे जानवरों की जान को सबसे अधिक खतरा था, आज वहीं लोग इनकी रक्षा में दिन-रात एक किए हुए है। बुद्धेश्वर बोरा ने अपने जीवन में अस्सी हाथियों, दो चीते व अनगिनत हिरणों का शिकार किया होगा, लेकिन आज वो एमएमईएस के कमिटी का सदस्य है। लोगों को वन संरक्षण के

लिए प्रेरित करना उसके जीवन का अहम मकसद भी बन चुका है। इनमें पेड़-पौधों व पक्षियों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराने के लिए लगातार जगह-जगह पर वर्कशॉप का आयोजन किया जाता है। एमएमईएस के संयोजक पार्थ दास ने बताया कि वन्य जीवों के शिकार पर अंकुश लगाना मानस की पहचान को बनाए रखने के लिए आवश्यक था। इसके लिए गांव-गांव घूम कर महिलाओं को एकजुट किया। संस्था ने अपने आने वाले भविष्य को बेहतर बनाने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया कि वन्य जीवों व पक्षियों का शिकार कर भक्षण करने से वे परहेज करें। इतना ही नहीं, घर के पुरुष द्वारा शिकार कर लाए गए पक्षियों व जंगली जीवों को पकाने से परहेज करें। महिलाओं ने सराहनीय समुचित सहायता व अपना समर्थन दिया।

वन विभाग की कोशिशों और स्थानीय लोगों की भागीदारी के अच्छे परिणाम सामने आए हैं। वन्य जीवों का शिकार तो रुका ही, पेड़ों की कटाई लगभग बंद हो चुकी है। इस वजह से वन्य जीव अक्सर देखे जा सकते हैं। शाकाहारी जीवों की संज़्या बढ़ने से उन पर आश्रित मांसाहारी जीवों की संज़्या भी बढ़ने लगी। अब तो मानस में पोबितोरा अभयारण्य से एक सींग वाले गैंडे लाए गए हैं। उनकी संज़्या अभी 22 हो चुकी है। दो और गैंडों को यहां लाकर बसाना है, क्योंकि मानस में पहले गैंडे पाए जाते थे। इसलिए उन गैंडों को यहां बसाने में विशेष दिक्कत नहीं हो रही है। मानस में गैंडे का प्रिय घास काफी मात्रा में है।

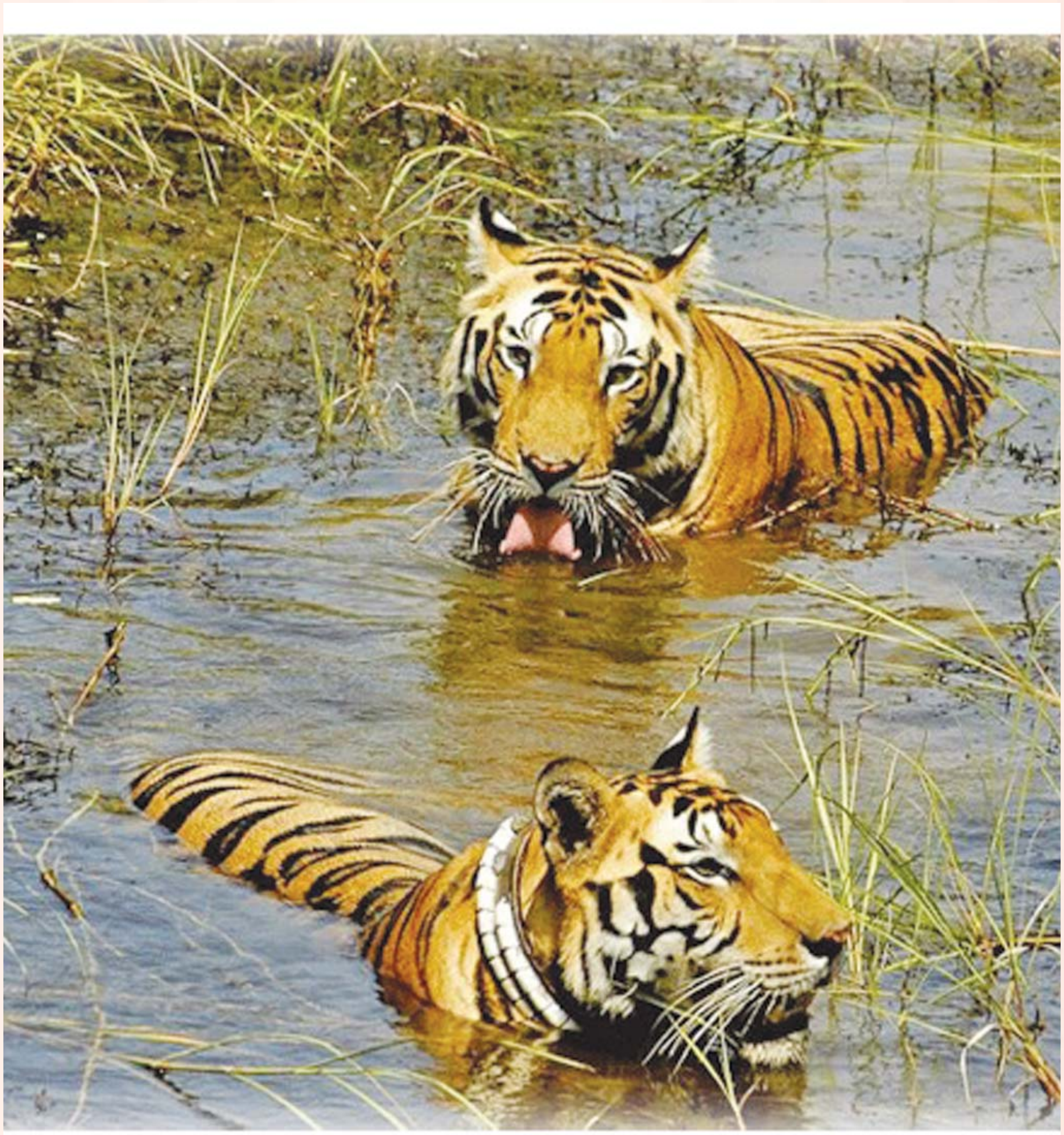

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस-2019

निगम के गुवाहाटी कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितंबर 2019 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कि हिंदी टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी आकस्मिक भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और हिंदी अतांक्षरी प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया, जिसमें बहुत संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 14 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह के दौरान श्री सरल कुमार सरकार, मुख्य महाप्रबंधक (सी)-प्रभारी- परि. हाईड्रो/ डी एंड ई), और कार्यालय के वरिष्ठं अधिकारियों द्वारा प्रतियोगितायों को पुरस्कृत किया गया।

14 सितंबर 2019 को हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर श्री सरल कुमार सरकार, मुख्य महाप्रबंधक (सी) -प्रभारी- परि. हाईड्रो/ डी एंड ई), और कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में कर्मचारीगण उपस्थित थे। श्री सरल कुमार सरकार मुख्य महाप्रबंधक (सी) -प्रभारी- परि. हाईड्रो/ डी एंड ई), ने प्रदीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी दिवस समारोह के कार्यक्रम का शुभारंभ किया तत्पश्चात मुख्य-महाप्रबंधक (सी) -प्रभारी- परि. हाईड्रो/ डी एंड ई), का स्वागत पुष्पों एवं गमछा से किया गया। इस अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने बहुमूल्य भाषण दिये। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कबिता दास, उप-महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया।

1. **हिंदी टिप्पणी व प्रारूप लेखन**

प्रथम : श्रीमती नवनीता डे

द्वितीय : श्रीमती बरनाली डेका

तृतीय : श्रीमती रिंकुमनी देवी

2. **हिंदी अनुवाद**

प्रथम : श्रीमती रीता राय

द्वितीय : मो. अमजद आलम

तृतीय : श्रीमती मल्लिका दास

3. **हिंदी आकस्मिक भाषण**

प्रथम : श्री महादेव राय

द्वितीय : श्रीमती चंद्रा सैकिया

तृतीय : श्रीमती अरूंधती गौस्वामी

4. **हिंदी प्रश्नोत्तरी**

प्रथम : एजीटीपी ग्रुप : श्रीमती अनामिका अग्रवाला, श्री भास्कर बर्मन

द्वितीय : गुवाहाटी ग्रुप : श्री विश्वजीत देव, श्रीमती रिंकुमनी देवी

तृतीय : दोयांग ग्रुप : मो. अमजद आलम, श्रीमती अरूंधती गोस्वालमी

5. **हिंदी अंताक्षरी**

प्रथम : पारे ग्रुप : श्रीमती नवनीता डे, श्रीमती अरूंधती गोस्वामी

द्वितीय : एजीटीपी ग्रुप : श्रीमती ज्योततसना शर्मा, श्री भास्कर बर्मन

तृतीय : गुवाहाटी ग्रुप : श्री विश्वजीत डे, श्री सुभाष कलिता

सांत्वना पुरस्कार

1. श्रीमती रूना संगमई
2. मो. एन.एच. लश्ककर
3. श्रीमती अंजलि महंता
4. मो. कमल हैदर,
5. मो. इरशाद इस्ला्म
5. श्रीमती कबिता दास
6. श्रीमती आशा डेका
7. श्रीमती नामिता दास

निर्णायक

श्री सीतांशु धर, उप–महाप्रबंधक (सी)

श्रीमती अनामिका अग्रवाला, प्रबंधक (सी)

श्री नवज्योति मेधी, उप–महाप्रबंधक (सी)

श्रीमती सुप्रिया मजूमदार, वरि. प्रबंधक (सी)

संचालक :

श्री सुभाष कलिता, वरि. प्रबंधक (आईटी)
हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

श्री देवजीत दास , उप. महाप्रबंधक (सी)
हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता

नीपको भवन, गुवाहाटी : 13 अगस्त2020 को कोविद-19 का परिक्षण करवाते अधिकारी व कर्मचारीगण

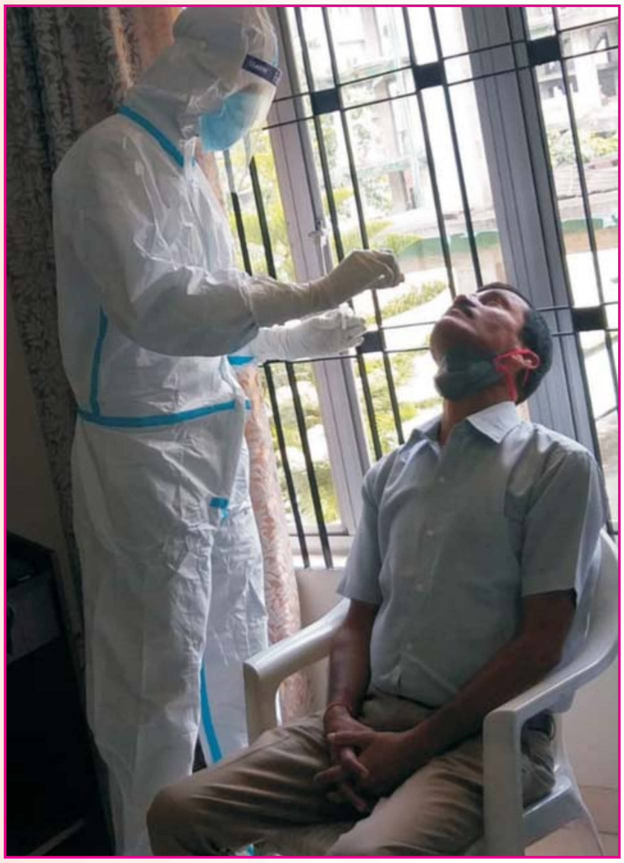

कविता दास

औरत

वो महफिलों का तार है,
खुशबू का आगाज है
ममता की मूरत है,
इक चाँद-सी सूरत है।
वो भाई की बहना है,
मर्यादा का गहना है ।
किसी की अर्धान्गिनी है,
मचलती-सी रागिनी है।
वो फूल-सी बिटिया है,
पुरुष बाती तो वो दीया है।
फिर क्यूँ सहे अन्याय वो,
क्यूँ बने बेसाहय वो।
कहीं तो वो पूजी जाये,
कहीं पैरों की जूती का पद पाये।
क्यों खो गया उसका अस्तित्व,
कहाँ छुप गया उसका व्यक्तित्व।
ऐ मर्द ये कैसी तेरी मर्दानगी,
जिसने तुझे जन्मा उससे कैसी ये बानगी।
हर औरत को मान तू बहना या जननी,
यही चाहे तेरी समर्पिता पत्नी।
माँ के दूध का चुका दे तू कर्जा,
औरत को दे दे समाज मे अव्वल दर्जा॥

माँ

बीनापाणी हजारिका

तू याद बहुत जब आती है,
मेरे पास क्यूँ नहीं आती है।
तेरी ममता की उस छाँव में,
हम चैन से सोया करते थे।
तेरे सीने में मुँह ढाँप के,
हम खुलके रोया करते थे.
क्या खूब था वो लम्हा भी,
जब मेरे साथ सदा तू होती थी।
गर सोचते थे खुद को तन्हा भी,
तू प्यार से चूमा करती थी।
क्या स्वाद था हर उस दाने में,
जिसे तू हाथ लगाया करती थी।
मैं रूठ जाती जब खाने से,
तू बैठ खिलाया करती थी।
आज तू इतनी दूर जो है,
तेरी याद बहुत अब आती है।
ना खाने में कोई स्वाद है अब,
ना नींद चैन से आती है।
माँ आजा मेरे पास जरा,
तेरे आंचल में छुप जाऊँ मैं।
तुझसे इतनी दूर जो हुँ ,
तू बता कैसे जी पाऊँ मैं।
माँ तू याद बहुत अब आती है,
मेरे पास क्यूँ नहीं आती है।

जंगल सफारी के लिए तैयार है

काजीरंगा

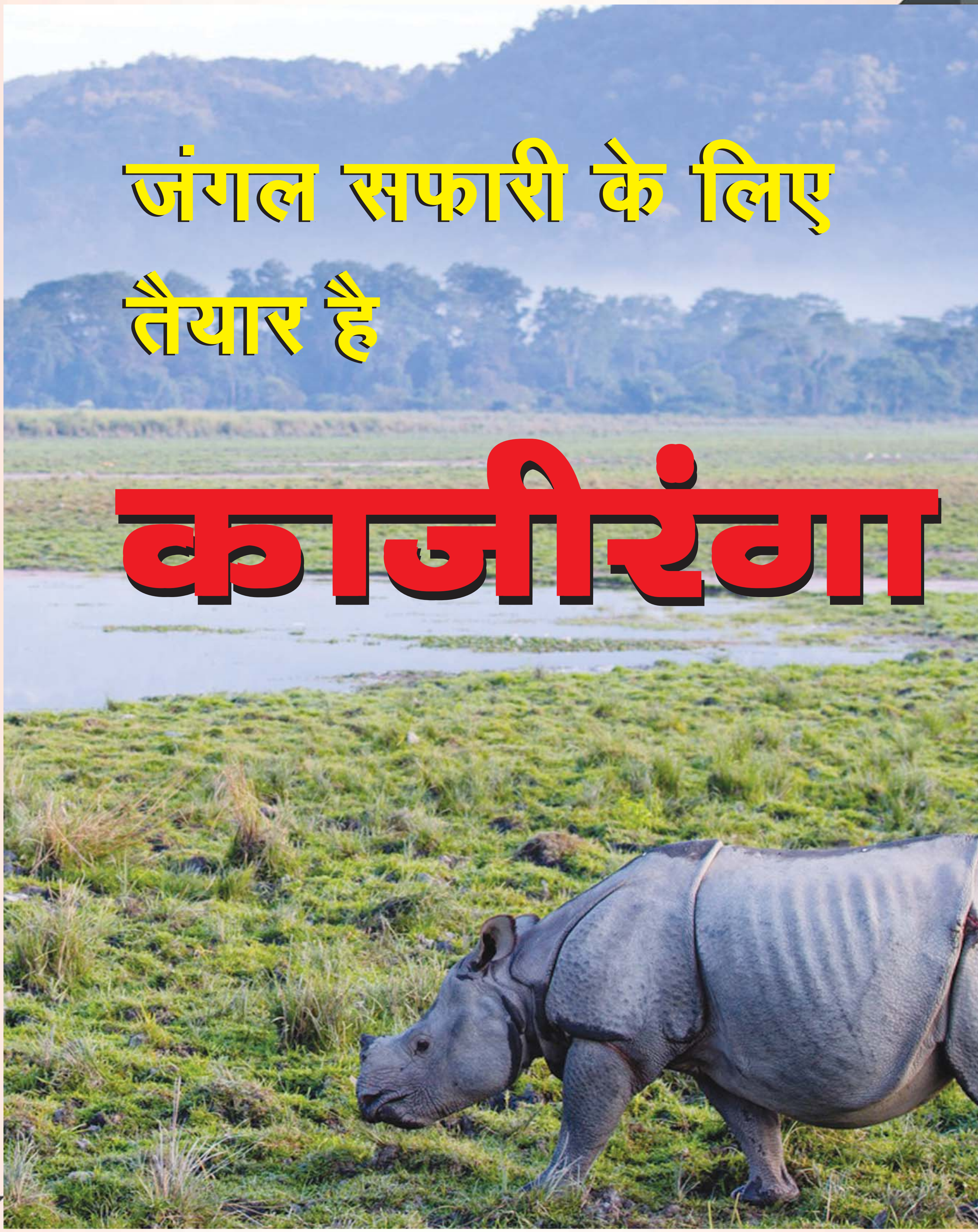

❑ सोनाली पोद्दार प्रजापति
पत्नी - विजय प्रजापति

जंगल सफारी के लिए विश्व प्रसिद्ध काजीरंगा नेशनल पार्क और मानस नेशनल पार्क में परिवार के बिताने के बाद का अनुभव। काजीरंगा जहां एक सींग वाले दुर्लभ गैंडे के लिए विज़्यात है तो मानस में राह चलते बाघों के दर्शन हो जाते हैं। इसके अलावा पोबितोरा अभयारण्य भी तैयार है। वहां भी गैंडे को करीब से देखा जा सकता है। असम आने वाले पर्यटक शिलोंग और चेरापूंजी भी जाते हैं। इस बार शिलोंग और चेरापूंजी का मौसम भी सुहाना है। इसलिए यह उम्मीद की जा रही है कि पिछले एक दशक में इस बार सबसे अधिक पर्यटक आएंगे।

इसमें दो राय नहीं है कि प्रकृति ने असम को अपनी हाथों से संवारा है। हरी-भरी पहाड़ियों के बीच से निकलने वाले झरने और वन्य प्राणियों से भरे जंगलों में सफर करना पर्यटकों के लिए आनंदकारी अनुभव होता है। नवंबर से फरवरी तक असम का मौसम जंगल सफारी के अनुकूल रहता है। न गर्मी और न ठंड। साथ में सुरक्षा का अहसास। दिन की कमजोर धूप में जंगल के बीच से गुजरना हर पर्यटक को अच्छा लगता है। रात की हल्की ठंड में कैंप फायर आनंद का अतिरेक पार कर जाता है। यदि उस दौरान बदली घिर जाए और फुहार पड़ने लगे तो जंगल में मंगल हो जाता है। जंगल के अंदरूनी इलाके तक जाने के लिए वन विभाग ने जीप की व्यवस्था की है। लेकिन जंगल सफारी का आनंद तो हाथियों की सवारी है। इसके लिए एक निर्धारित सीमा तय है। एक हाथी पर तीन-चार पर्यटक आराम से सफर कर सकते हैं।

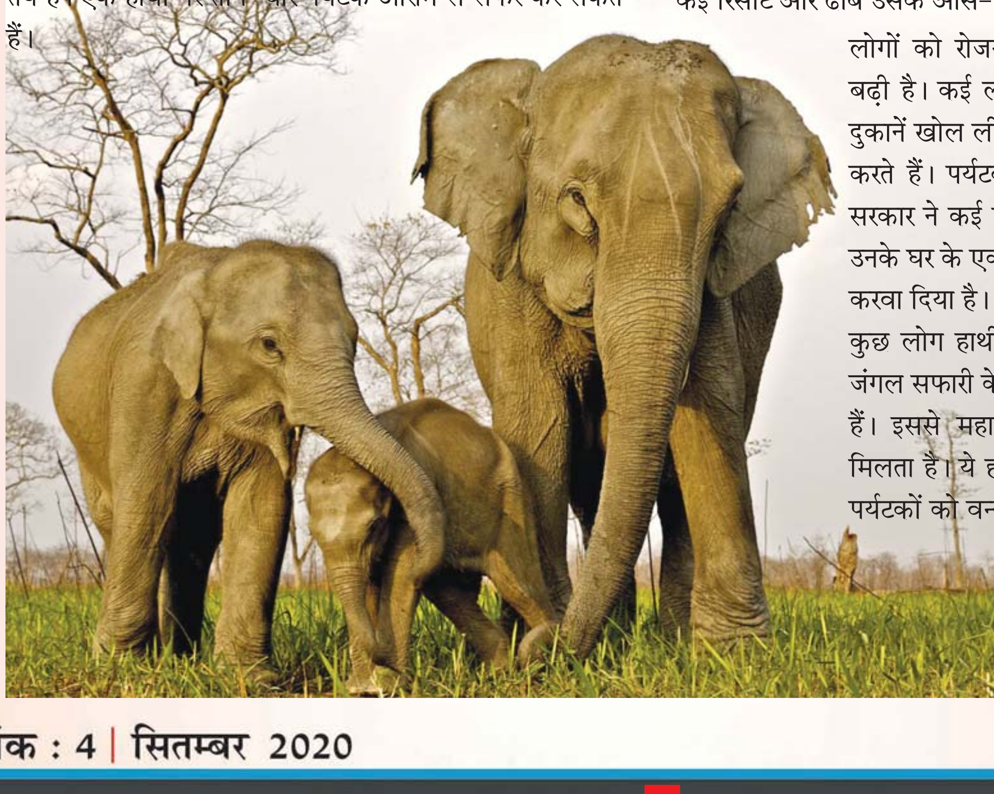

चाहें तो पूरा हाथी भी रिजर्व करा सकते हैं। जंगल के अंदरूनी इलाके तक जाने के लिए पर्यटकों से सुबह जाने का आग्रह किया जाता है, ताकि अंधेरा होने के पहले जंगल से बाहर आया जा सके। शाम के बाद जंगल के अंदर रहना खतरनाक हो सकता है। इसलिए वन विभाग के कर्मचारी शाम होते ही पर्यटकों से बाहर जाने का आग्रह करते रहते हैं। हाथी पर सवार होकर गैंडों को करीब से देखने का आनंद कुछ और ही है। महावत को गैंडों के स्वाभाव का पता होता है। वे वैसे मादा गैंडों के करीब नहीं जाते हैं, जिनके बच्चे उनके साथ रहते हैं। अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए मादा गैंडा हाथी पर आक्रमण कर सकती है। खास बात यह है कि गैंडे घने जंगलों की बजाय बड़ी घास से भरे मैदानों में विचरण करना पसंद करते हैं। उस इलाके में सड़क नहीं है, इसलिए पर्यटक हाथी पर जाना ज्यादा पसंद करते हैं। काजीरंगा आने वाले विदेशी पर्यटक तो हाथी पर ही पूरे जंगल की यात्रा करना चाहते हैं। सुबह क्या गए, शाम में ही जंगल से बाहर आते हैं, इसलिए पर्यटक साथ में पानी की बोतल और लंच पैकेट लेकर जाते हैं। इसकी व्यवस्था गेस्ट हाउस वाले कर देते हैं।

पर्यटकों के आग्रह पर रात में पार्क के बाहरी इलाके में वन विभाग के लोग कैंप फायर का भी आयोजन करते हैं। वहीं पर खाने-पीने का इंतजाम किया जाता है। कुछ पर्यटक मछली पकड़ते हैं। पर्यटक वन्य जीवों और वनस्पतियों के बारे में विशेष जानकारी भी ले सकते हैं। इसकी व्यवस्था वन विभाग करता है।

काजीरंगा के अंदरूनी इलाके में दिन में भी अंधेरा रहता है। कोहरा रेंज में पर्यटकों के लिए कई गेस्ट हाउस और रिसोर्ट बन चुके हैं। देशी और विदेशी पर्यटकों की संज़्या बढ़ने के साथ ही कई रिसोर्ट और ढाबे उसके आस-पास खुल गए हैं। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिला है और उनकी आय बढ़ी है। कई लोगों ने अपने घर के सामने ही दुकानें खोल ली हैं। कुछ युवक गाइड का काम करते हैं। पर्यटकों को ठहराने के लिए असम सरकार ने कई ग्रामीणों को विज़ीय मदद देकर उनके घर के एक हिस्से को गेस्ट हाउस की तरह करवा दिया है। पर्यटक घरेलू माहौल में रहते हैं। कुछ लोग हाथी पालते हैं और होटल के गेस्ट जंगल सफारी के लिए उनसे हाथी भाड़ा पर लेते हैं। इससे महावत और हाथियों को रोजगार मिलता है। ये हाथी जंगल के अंदर तक जाकर पर्यटकों को वन्य जीवों का नजारा दिखलाते हैं।

गुवाहाटी से काजीरंगा करीब पांच घंटे की ड्राइव पर पहुंचा जा सकता है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे है। गुवाहाटी

में भाड़े की कार उपलब्ध है। देश के किसी भी हिस्से से गुवाहाटी तक सीधी वायु और रेल सेवा उपलब्ध है। जो पर्यटक वहां रुकना नहीं चाहते, वे तड़के सुबह गुवाहाटी से निकलकर देर रात तक वापस भी आ सकते हैं, लेकिन एक रात काजीरंगा में रुके बिना जंगल सफारी का आनंद नहीं मिल सकता है।

असम का काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क दुर्लभ वन्य प्राणियों और पक्षियों का प्राकृतिक बसेरा रहा है। विश्व के लुप्तप्राय: प्राणी एक सींग वाले गैंडे विश्व भर में सबसे अधिक इसी पार्क में पाए जाते हैं। काजीरंगा की सबसे बड़ी पहचान यही है। ढाई हजार किलोग्राम वजन तक का यह गैंडा साढ़े छह फीट ऊंचा और साढ़े बारह फीट लंबा होता है। जबकि मादा का वजन आमतौर पर दो हजार किलोग्राम तक होता है। इसके सूंघने और सुनने की क्षमता अपार है, लेकिन देखने में कमजोर होता है।

बाघ, हाथी, जंगली भैंसे और तेंदुआ के लिए भी काजीरंगा प्रसिद्ध है। इसलिए इसे यूनेस्को के विश्व के धरोहरों की सूची में शामिल किया गया है। इसकी भौगोलिक स्थिति ने इसे सहज और दुर्गम बनाकर रखा है। पर्यटकों को पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग इसके बीच से गुजरता है तो दुर्गम पहाड़ और घने जंगल पशुओं को मानव की आवाजाही से होने वाले व्यवधानों से दूर रखता है। इसकी सीमा ब्रह्मपुत्र के किनारे से लेकर दूर कार्बी-आंग्लोंग के जंगलों तक फैली हुई है। चार सौ तीस वर्ग किमी क्षेत्र में फैला काजीरंगा नगांव, कार्बी-आंग्लोंग और गोलाघाट जिले के अधीन आता है। लेकिन काजीरंगा के महत्व को देखते हुए इसे वन विभाग ने एक निदेशक के अधीन कई सुरक्षित वन्य क्षेत्रों में बांट दिया है। प्रकृति ने काजीरंगा को अपने हाथों से सजाया है और इसके रख-रखाव के लिए सारी व्यवस्था प्रकृति स्वयं करती है।

काजीरंगा के कम-से-कम चालीस फीसदी इलाके में ब्रह्मपुत्र के बाढ़ का पानी फैल जाता है। इससे उसकी वनस्पतियों और घास को नया जीवन मिलता है। एक सींग वाले गैंडों के लिए बड़ी घास की जरूरत पड़ती है। ये शाकाहारी वन्य प्राणी लंबी घास पर ही निर्भर रहता है। काजीरंगा के निचले इलाके में घास की घनी झाड़ियां गैंडों के लिए सबसे प्रिय इलाके हैं। रास्ता चलते पर्यटक भी आराम से घास चरते गैंडों का दीदार कर लेते हैं।

असम के कृषि मंत्री अतुल बोरा का मानना है कि जब तक स्थानीय लोगों को काजीरंगा की वजह से लाभ नहीं होगा, वन्य प्राणियों के संरक्षण में उनकी रुचि पैदा नहीं होगी। उनके प्रयास से ही आसपास के गांवों में गेस्ट के ठहरने का इंतजाम किया गया। वे चाहते हैं कि पर्यटक के लिए ज्यादा होटल खोलने की बजाय ग्रामीण गेस्ट हाउस को बढ़ावा दिया जाए। इससे पर्यटकों को कम पैसे में रहने के लिए घरेलू माहौल बनेगा और ग्रामीणों की आय बढ़ेगी तो वे पार्क को बचाने का भी प्रयास करेंगे। ●

प्रेरणा

रीता राय

कहीं दूर किसी दुनिया में,
एक परिंदा उड़ता था।
दिल ही दिल की सुनता था,
सपने छुप छुप के बुनता था।
हौसलों की उड़ान थी वो,
जब पंख उसने फैलाये थे,
धीरे-धीरे, उड़ता वो गया,
ना कदम उसके डगमगाए थे।
आ पहुँचा फिर वो देहरी पे,
इस दुनिया या शायद जिंदगी की।
दुनिया के चेहरों को देख ,
पंख उसके जब कंपकपाए थे।
लालच ,नफरत और स्वार्थ ने,
जब उसके सपने चुराए थे।
दिल ही दिल से टूट गया,
जब सब अपने नही पराये थे।
जब जीवन को वो छोड़ गया,
तब आँसू दुनिया ने बहाए थे।
कहीं दूर कभी किसी दुनिया में,
वो एक परिंदा उड़ता था।

मैं तो पानी हूँ जी

विजय प्रजापति

निज अस्तित्व मिटाने वाला
पर अस्तित्व बचाने वाला
मैं जग-जीवन का रखवाला
सब की प्यास बुझानी वाला
मैं तो लिखता सृष्टि कहानी हुँ जी
मैं तो पानी हूँ जी।।

दुनिया मुझको जीवन कहती
मेरी नदियाँ हर क्षण बहती
बदरी मुझको धारण करती
मुझसे ताल-तलैया भरती
मैं तो निश्छल बलिदानी हुँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

मैंने सबमें मिलना जाना
मिलकर गंगा जल बन जाना
अरे हंस! फिर क्यों विलगाना
दुध-दुध है तुझको पाना
मैं तो समरसता का सानी हुँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

मुझे प्रदूषित नहीं बनाना
सदा निरामय तन-मन पाना
मुझ सा तरल-सरल बन जाना
संरक्षण-हित पौध लगाना
मैं तो आदि अंत का ज्ञानी हूँ जी
मैं तो पानी हुँ जी।।

पूर्वोत्तर

संकलनकर्ता : **नमिता दास**

मैं एक युवा
भारत के पूर्वी उत्तर-प्रांत का
मेरा नाम जो भी हो
मत पूछिए आप
मैं एक युवा
भारत के पूर्वी उत्तर-प्रांत का
मेरा नाम जो भी हो
मुझसे मत पूछिए कि मैं
असम, अरुणाचल, मणिपुर
और मिजोरम का
रहने वाला हूं
या मेघालय, नागालेंड, त्रिपुरा
और सिक्किम का।

बस यही जानिए
मैं उत्तर-पूर्व का
जहां सूरज उगता है
डूबता नहीं।

मैं युवा उत्तर पूर्व का
उषा, प्रियंवदा और जयमती के देश का
मुझे प्रेम करना आता है,
और प्रेम निभाना भी आता है।
मैं कुरुक्षेत्र में कौरव सेनापति
वीर भगदत्त के प्रांत का हूं।

अपनी दोस्ती निभाने के लिए
प्राण गवां सकता हूं
और प्राण ले भी सकता हूं।

-मिसिंग जनजाति के एक कवि ज्योतिष मिसिंग पाई की हिंदी में लिखी लंबी कविता का एक अंश

राजभाषा हिन्दी और मेरे मन का दर्द

(तरुन कुमार)
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

हिन्दी में है यह कविता, हिन्दी में है यह कविता
पर सच पूछो तो अपने पर ही बीता
जैसे अभी भी बनवास में
भाषा की है यह सीता ।

स्थिति परिस्थिति बदली है, स्थिति परिस्थिति बदली है
पर हमारी सोच कितनी बदली है
वेशभूषा , रहन-सहन बदला है, वेशभूषा , रहन-सहन बदला है
पर चौहत्तर वर्ष की आजादी में
हिन्दी भाषा के लिए, हमें कितना समय मिला है ?

आजादी के बाद भी चौहत्तर वर्ष की अवधि
यह अपनी भाषा हिन्दी, बनी रही वनवासिनी
आज भी क्या कम होता है , जन-जन की इस हिन्दी भाषा का
रोम रोम रोता है ।
जब वर्ष भर में एक पखवाड़ा और बस एक दिन
हिन्दी दिवस मनता है ।

अपनी भाषा के साथ भेदभाव का, यह कैसा जहर हम पीते हैं
अपने ही देश में रहकर, हिन्दी की अंग्रेज़ियत जीते है ।
आओ अब वह समय आ गया, हिन्दी को अपनाने का
हिन्दी में चलें, हिन्दी में दौड़ें, हिन्दी में कदम से कदम मिलाएँ ।

सुबह हमारी हिन्दी से हो,
शाम हमारी हिन्दी
कल पर यह सब छोड़ना कैसा ?
बस मन में ठान ले अभी से
अभी से हिन्दी, अभी से हिन्दी, अभी से हिन्दी और अभी से हिन्दी ।।।

26 जनवरी, 2020 गणतंत्र दिवस मनाया गया

१5 अगस्ता, 2020 स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

आशा का दीपक

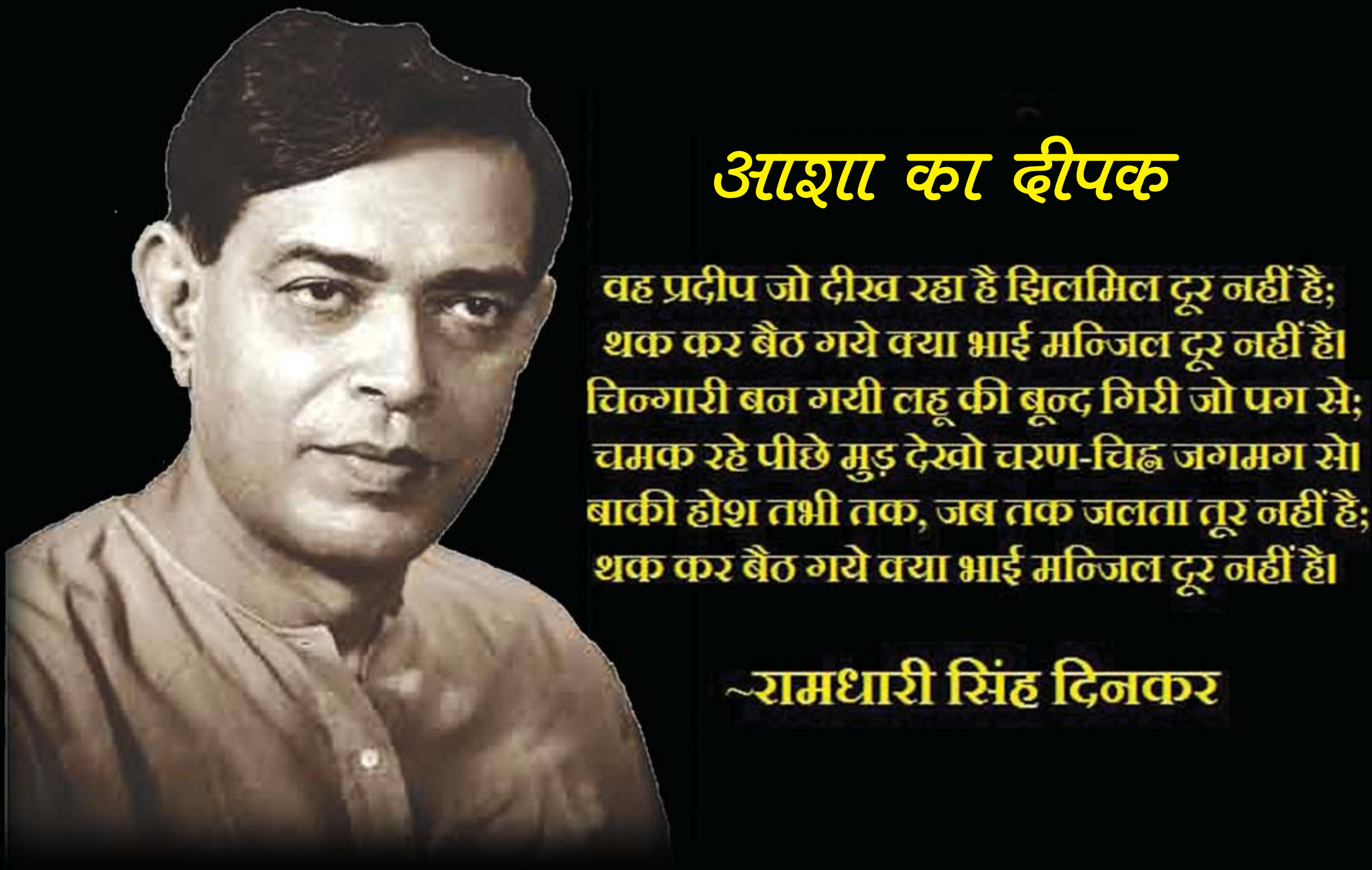

वह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल दूर नहीं है;
थक कर बैठ गये क्या भाई मन्जिल दूर नहीं है।
चिन्गारी बन गयी लहू की बून्द गिरी जो पग से;
चमक रहे पीछे मुड़ देखो चरण-चिह्न जगमग से।
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है;
थक कर बैठ गये क्या भाई मन्जिल दूर नहीं है।

अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तम का;
सारी रात चले तुम दुख झेलते कुलिश का।
एक खेय है शेष, किसी विध पार उसे कर जाओ;
वह देखो, उस पार चमकता है मन्दिर प्रियतम का।
आकर इतना पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है;
थककर बैठ गये क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य-प्रकाश तुम्हारा;
लिखा जा चुका अनल-अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही;
अम्बर पर घन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है;
थककर बैठ गये क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।

कार्यालय में विभिन्न गतिविधियाँ

कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्याशाला

नीपको
NEEPCO

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (नीपको), गुवाहाटी
नीपको भवन, आर.जी. बरुवा रोड, सुन्दरपुर गुवाहाटी असम-781005